राष्ट्र-गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा!
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

- रवींद्रनाथ टैगोर

वंदेमातरम्

वंदेमातरम् वंदेमातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
सस्यश्यामलाम् मातरम् वंदेमातरम्
शुभ्रज्योत्सना पुलकित यामिनी
पुल्लकुसुमिता द्रुमदल शोभिनी
सुहासिनी सुमधुर भाषिणी
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदेमातरम्

-बंकिमचंद्र चटर्जी

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिताँ हमारा।।
परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का।
वो संतरी हमारा, वो पासबाँ हमारा।।
गोदी में खेलती हैं, इसकी हज़ारों नदियाँ।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनाँ हमारा।।
मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ताँ हमारा।।

- मोहम्मद इक़बाल

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है। मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा। मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

SCERT TELANGANA

इकाई - I

1. बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण

क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी।
प्यासी धरती देख माँगती,
हो क्या मेघों से पानी?

प्रश्न

1. मीठे गीत कौन गाती है?
2. कोयल किसके लिए पानी माँगती है?
3. बादल प्रकृति की शोभा कैसे बढ़ाते हैं?

उद्देश्य

प्रकृति के प्रति काव्य रचनाओं के प्रोत्साहन के साथ-साथ सौंदर्यबोध पाना और मनोरंजन करना।

विधा विशेष

'बरसते बादल' कविता पाठ है। कविता भावनाओं को उदात्त बनाने के साथ-साथ सौंदर्यबोध को भी सजाती-सँवारती है। प्रस्तुत कविता नाद (ध्वनि) के साथ गेय योग्य है।

कवि परिचय

प्रकृति के बेजोड़ कवि माने जाने वाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 में अल्मोड़ा में हुआ। साहित्य लेखन के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी', 'सोवियत रूस' और 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' दिया गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- *वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा* आदि। इन्हें *चिदंबरा* काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए। शब्द का अर्थ समझ में न आए तो उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : *वर्षा ऋतु हमेशा से सबकी प्रिय ऋतु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुंदरता देखने लायक़ होती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य खुशी से झूम उठते हैं। इसी सौंदर्य का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है।*

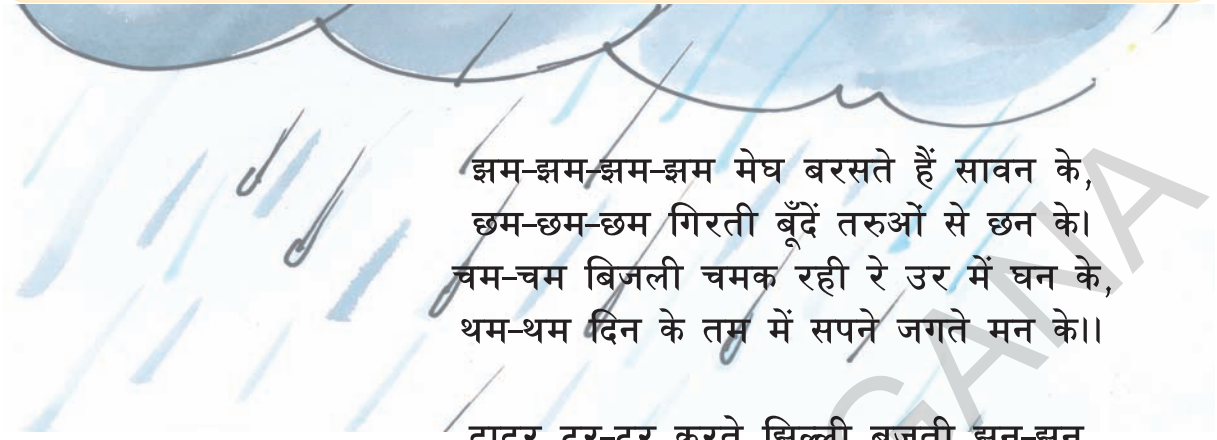

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के।
चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के।।

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,
'म्यव-म्यव' रे मोर, 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।
उड़ते सोन बलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रंदन,
घुमड़-घुमड़ गिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,
रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अंतर।
धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर,
रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि भर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,
आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।
इंद्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आए जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानंदन पंत

प्रश्न

1. मेघ, बिजली और बूँदों का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है?
2. प्रकृति की कौन-कौनसी चीज़ें मन को छू लेती हैं?

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(आ) वाक्य उचित क्रम में लिखिए।

1. हैं झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन।
2. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ।
3. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं।

(इ) नीचे दिए गए भाव की पंक्तियाँ लिखिए।

1. बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।
2. कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार-बार आए और सब मिलकर झूलों में झूलें।

(ई) पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बंद किए हैं बादल ने अंबर के दरवाजे सारे,
नहीं नज़र आता है सूरज ना कहीं चाँद-सितारे।
ऐसा मौसम देखकर, चिड़ियों ने भी पंख पसारे,
हो प्रसन्न धरती के वासी, नभ की ओर निहारे।।

1. किसने अंबर के दरवाज़े बंद कर दिए हैं?
2. इस कविता का विषय क्या है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है। कैसे?

(आ) 'बरसते बादल' कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी-सी कविता लिखिए।

(ई) 'फिर-फिर आए जीवन में सावन मनभावन' ऐसा क्यों कहा गया होगा? स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

(अ) तरु, गगन, घन (पर्याय शब्द लिखिए।)

(आ) मेघ, तरु (वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(इ) इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए।

1. बादल बरसते हैं। (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए।)
2. पेड़-पौधे, पशु-पक्षी (समास पहचानिए।)

(ई) शब्द-संक्षेप लिखिए। - 1. मन को भाने वाला 2. मन को मोहने वाला

परियोजना कार्य

वर्षा, बादल, नदी, सागर, सूरज, चाँद, झरने आदि में किसी एक विषय पर प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए। कक्षा में उसका प्रदर्शन कीजिए।

SCERT TELANGANA

2 ईदगाह - प्रेमचंद

उन्मुखीकरण

पथिकों को जलती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
खुशबू भरे फूल देते हैं,
हमको नव फूलों की माला।
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ देना सीखें।

प्रश्न

1. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम किससे मिलता है?
2. खुशबू भरे फूल हमें क्या देते हैं?
3. 'हम भी तो कुछ देना सीखें' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उद्देश्य

कहानी विधा से परिचित कराना। छात्रों में कहानी लेखन कला का विकास करना। उनमें त्याग, सद्भाव व विवेक जैसे संवेदनशील कर्त्तव्य बोध संबंधी गुणों का विकास करना।

विधा विशेष

'कहानी' शब्द 'कह' धातु के साथ 'आनी' कृत प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'कह' का आशय 'कहना' से है । किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाना ही कहानी है ।

लेखक परिचय

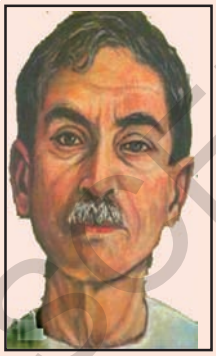

प्रेमचंद का जन्म एक गरीब घराने में काशी में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। इनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्होंने ट्यूशन पढ़ाते हुए मैट्रिक तथा नौकरी करते हुए बी.ए. पास किया। इन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास और लगभग तीन सौ कहानियों की रचना की। इन्हें 'उपन्यास सम्राट' भी कहा जाता है। इनकी कहानियाँ *मानसरोवर* शीर्षक से आठ खंडों में संकलित हैं। *गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, मंगलसूत्र आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इनकी प्रमुख कहानियों में पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, कफ़न* आदि प्रमुख हैं। उनका निधन सन् 1936 में हुआ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए। शब्द का अर्थ समझ में न आए तो उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हों तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

विषय प्रवेश : *प्राचीन काल से ही नैतिक मूल्य भारतीय जीवन के प्रतिबिंब रहे हैं। इसका रूप हर भारतीय में समाया हुआ है। हम अपने बुज़ुर्गों (वयोवृद्ध) का बड़ा ध्यान रखते हैं। जैसे इस कहानी में दर्शाया गया है-*

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। बार-बार जेब से खज़ाना निकालकर गिनते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे अनगिनत चीज़ें लाएँगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या ...। और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह भोली सूरत का चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का था। उसका पिता गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली पड़ती गई और एक दिन वह भी परलोक सिधार गई। किसी को पता न चला कि आख़िर अचानक यह क्या हुआ।

अब हामिद अपनी दादी अमीना की गोदी में सोता है। दादी अम्मा हामिद से कहती है कि उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बहुत-सी अच्छी चीज़ें लाने गई हैं। आशा तो बड़ी चीज़ है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं है। लेकिन हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है- ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने पिता के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा कौन है? भीड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह

SCERT TELANGANA

थोड़ी दूर चलकर, उसे गोदी ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सारी सामग्री जमा करके झटपट बना लेती। यहाँ तो चीज़ें जमा करते-करते घंटों लगेंगे।

गाँव से मेला चला। बच्चों के साथ हामिद जा रहा था। शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें - अदालत, कॉलेज-क्लब, घर आदि दिखाई देने लगे। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए हैं। सहसा ईदगाह नज़र आयी और उसी के पास ईद का मेला। नमाज़ पूरी होते ही सब बच्चे मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर धावा बोल देते हैं। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास केवल तीन पैसे हैं। मोहसिन भिश्ती खरीदता है, महमूद सिपाही, नूरे वकील और सम्मी धोबिन। हामिद खिलौनों को ललचाई आँखों से देखता है। वह अपने आपको समझाता है, "मिट्टी के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।" फिर मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ लीं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मोहसिन कहता है, "हामिद, रेवड़ी ले ले, कितनी खुशबूदार है।" हामिद ने कहा, "रखे रहो, क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?"

सम्मी बोला, "तीन ही पैसे तो हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?" हामिद मौन रह गया।

मिठाइयों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें आती हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। हामिद को ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं, अगर चिमटा ले जाकर दादी को दे दें, तो वह कितनी

प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। दादी अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- "मेरा बच्चा! अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देती रहेंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी। हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। हामिद ने दुकानदार से पूछा, "यह चिमटा कितने का है?" छह पैसे क़ीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। हामिद ने

SCERT TELANGANA

कलेजा मज़बूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' दुकानदार ने बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। दोस्तों ने मज़ाक किया, ''यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?''

घर आने पर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगीं। सहसा हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैंने मोल लिया है अम्मा।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिये।''

प्रश्न

1. ईद के दिन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।
2. हामिद ग़रीब है फिर भी वह ईद के दिन अन्य लड़कों से अधिक प्रसन्न है, क्यों?
3. हामिद की खुशी का कारण क्या है?

अमीना ने अपने माथे पर हाथ रखा। वह अफ़सोस करती हुई, आह! भरती हुई बोली- ''यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, यह मुझसे देखा न जाता था अम्मा! इसलिए मैं इसे लिवा लाया।''

अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, मार्मिक प्रेम था जो रस और स्वाद से भरा। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। आँचल फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जातीं और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

4. हामिद चिमटा क्यों खरीदना चाहता था?
5. हामिद के हृदयस्पर्शी विचारों के प्रति दादी अम्मा की भावनाएँ कैसी थीं?

SCERT TELANGANA

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार कौन हैं? इनकी रचनाओं की विशेषता क्या है?
2. बालक प्रायः अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताइए कि हामिद का स्वभाव कैसा है?

(आ) हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए।

1. हामिद के पास पचास पैसे थे। ( )
2. अमीना हामिद की मौसी थी। ( )
3. मोहसिन भिश्ती खरीदता है। ( )
4. हामिद खिलौने खरीदता है। ( )

(इ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अमीना का क्रोध तुरंत ..... में बदल गया।
2. क़ीमत सुनकर हामिद का दिल.....गया।
3. हामिद ..... लाया।
4. महमूद के पास ..... पैसे थे।

(ई) अनुच्छेद पढ़कर दो प्रश्न बनाइए।

बहुत समय पहले की बात है। श्रवण कुमार नामक एक बालक रहता था। उसके माता-पिता देख नहीं सकते थे। किंतु उन्हें इस बात का दुख नहीं था। उनका पुत्र सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहता था। एक दिन माता-पिता ने अपने पुत्र से चारधाम यात्रा की इच्छा व्यक्त की ।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों?

(आ) 'ईदगाह' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) हामिद और उसके मित्रों के बीच हुई बातचीत की किसी एक घटना को संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताइए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. ईद, प्रभात, वृक्ष (पर्याय शब्द लिखिए।)
2. मिठाई, चिमटा, सड़क (वचन बदलिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. बेसमझ, परलोक, निडर (उपसर्ग पहचानिए।) 2. दुकानदार, ग़रीबी (प्रत्यय पहचानिए।)

(इ) इन्हें समझिए और अभ्यास कीजिए।

हामिद ने कहा कि घर की देखरेख दादी ने की।

(ई) पाठ में आये मुहावरे पहचानिए और अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

वरिष्ठ नागरिकों (वयोवृद्धों) के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए। कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

SCERT TELANGANA

पठन हेतु

यह रास्ता कहाँ जाता है?

पहला दृश्य

मोना : नानी, नानी। एक कहानी सुनाओ न!

गोलू : (नानी को मनाने के स्वर में) हाँ, नानी, कहो न!

नानी : तो तुम दोनों नहीं मानोगे। अच्छा सुनाती हूँ, सुनो। (एक क्षण ठहरकर नानी कहती है।) बहुत पुरानी बात है। उज्जैन नामक एक नगर था।

मोना : वह तो आज भी है।

नानी : कहाँ है, बतला तो?

मोना : मध्य प्रदेश में।

गोलू : हाँ, नानी, उज्जैन नाम का एक नगर था, फिर?

नानी : राजा भोज वहाँ का राजा था।

मोना : मेरी किताब में लिखा है, नानी, कि वह बहुत बड़ा विद्वान था। उसके दरबार में एक कवि रहता था, नाम था उसका माघ।

गोलू : नानी को कहने दो न! किताब की बात बाद में पढ़ लेना। नानी आगे।

नानी : राजा भोज प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए भेष बदलकर रात में घूमा करता था।

गोलू : भेष बदलकर काहे, नानी?

नानी : ताकि कोई पहचान न ले। उसके साथ कवि माघ भी रहता था। एक रात प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए दोनों महल से निकले।

दूसरा दृश्य

माघ : महाराज! लगता है हम रास्ता भूल गए हैं। इस जंगल में हम भटक गए हैं।

भोज : तुम ठीक कहते हो कवि! हम मुसीबत में फँस गए हैं।

माघ : इस प्रकार हम कब तक भटकते रहेंगे?

भोज : जब तक सवेरा नहीं हो जाता।

माघ : लेकिन यह रात तो ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही है।

भोज : संकट की घड़ी लंबी प्रतीत होती है। बता सकते हो, रात और कितनी बाकी है?

माघ : बस सवेरा होने ही वाला है, महाराज! वह देखिए, भृगुतारा बहुत

SCERT TELANGANA

ऊपर आ गया है। वन्य पशु-पक्षी भी जाग चुके हैं।

भोज : तो हम रात भर कवि?

माघ : अब चिंता छोड़ें, यहाँ देखिए, पूरब दिशा पसर रही है, सूर्योदय हो रहा है। प्रकाश फैल रहा है।

भोज : वह तो है, लेकिन यहाँ तो कोई दिखाई भी नहीं देता, जिससे उज्जैन जाने का मार्ग पूछा जाए।

माघ : भला इतने सवेरे इस जंगल में।

भोज : वहाँ देखो, कोई छाया।

माघ : हाँ, महाराज, कोई लकड़हारिन है। लकड़ी चुनने जंगल में आई है।

भोज : हम उससे ही पूछें।

माघ : ठीक है, महाराज, हमें उसके पास चलना चाहिए।

भोज : हाँ, तो चलो। चलकर उसी से पूछें।

माघ : यह रास्ता कहाँ जाता है, बतला सकती हो?

भोज : (लकड़हारिन को चुपचाप खड़ा देख कर) तुम्हीं से पूछ रहे हैं।

लकड़हारिन : वह तो मैं समझ रही हूँ।

माघ : फिर चुप क्यों हो? बोलती क्यों नहीं?

लकड़हारिन : क्या जवाब दूँ? यही सोच रही हूँ।

भोज : इसमें सोचने की कौन-सी बात है?

लकड़हारिन : है, तभी तो चुप हूँ।

माघ : फिर कहो, हम भी तो सुनें।

लकड़हारिन : यह रास्ता कहीं आता-जाता नहीं है। वह तो यहीं पड़ा रहता है। लोग इस पर आते-जाते रहते हैं। आप दोनों कौन हैं और कहाँ जाना चाहते हैं?

भोज : हम दोनों मुसाफ़िर हैं और उज्जैन जाना चाहते हैं।

लकड़हारिन : मुसाफ़िर तो इस दुनिया में दो ही हैं - एक सूर्य, जो उधर निकल रहा है और एक चाँद, जो उधर मिट रहा है। तुम दोनों न सूर्य हो और न चाँद, फिर मुसाफ़िर कैसे हो?

माघ : ठीक कहती हो। हम दोनों न सूरज हैं और न चाँद। मेहमान अवश्य हैं।

लकड़हारिन : आप लोग मेहमान भी नहीं हो सकते क्योंकि मेहमान भी दो ही होते हैं - एक धन और दूसरा यौवन। समझे।

भोज : मैं राजा हूँ।

लकड़हारिन : क्योंकि राजा भी दो ही हैं - एक इंद्र और दूसरा यमराज। कहो, तुम इन दो में से कौन हो?

माघ : (चिढ़कर) तुम हमें नहीं जानती हो? हम दो ऐसे पुरुष हैं, जो किसी को भी कोई कसूर करने पर माफ़ कर सकते हैं।

लकड़हारिन : इतना गुमान नहीं करो तो बेहतर। माफ़ भी दो ही कर सकती हैं - एक धरती और दूसरी नारी। तुम दोनों न धरती हो और न नारी, फिर माफ़ करने की बात क्यों करते हो?

SCERT TELANGANA